International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

खेल मानसिकता के निखरते पक्ष पर एतिहासिक क्रीडा का प्रभाव : एक सामान्य अध्ययन

मानविन्द्र सिंह भादू, शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ. गजेन्द्र सिंह सरोहा, सहायक आचार्य (शारीरिक शिक्षा विभाग) टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

क्रीड़ा आदिकाल से सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन को अनुशासित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण उपादान रहा है। विश्व की प्रथम संस्कृतियों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मानव के संगठित जीवन के प्रारम्भ के साथ ही क्रीड़ा का भी आविर्भाव हुआ और जैसे–जैसे मानव सभ्यता परिवर्तित, परिवर्धित एवं परिष्कृत होती गई, वैसे–वैसे क्रीड़ा भी अभिनवीकरण (Innovation) की प्रक्रिया के तहत् सम–सामयिकतानुसार अपने को परिवर्तित करती गई। क्रीड़ा को आज व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्णायक के रूप में देखा जा रहा है, तो दूसरी ओर इसका सशक्त पहलू सामाजिक व्यवस्थापन से भी है। क्रीड़ा मात्र अंतः सामाजिक सम्बन्धों को सुचारू रूप से चलाने में ही योगदान नहीं दे रही है, वरन् आज इसकी भूमिका की अपरिहार्यता को अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सन्दर्भ, अंतः सांस्कृतिक अभिविनिमय एवं राष्ट्रों के मध्य मैत्री भावों को प्रशस्त करने के रूप में देखा जा रहा है। क्रीड़ा की बदलती समृद्धता ने चिकित्सकीय महत्त्व को भी सशक्त ढंग से उजागर किया है। प्रो0 पी0एन0 पाण्डेय' के शब्दों में, "आधुनिक तकनीकी औद्योगिक विकास क्रम से गुजर रहे विश्व, समाजों में प्रदूषण एवं मनोशारीरिक व्याधियों, जैसे–उद्विग्नता, रक्तचाप, मनोविकृति, अनिद्रा, शारीरिक शैथिल्य एवं सामान्य शारीरिक दुर्बलता से मुक्ति दिलाने तथा शरीर एवं मन को सौन्दर्य एवं शान्ति प्रदान कर किसी भी राष्ट्र में सचेष्ट एवं सबल पीढ़ी का सृजन एवं विकास करने में क्रीड़ा के चिकित्सकीय महत्त्व स्वयं सिद्ध प्रतीत हो रहे हैं। यदि यह कहा जाय कि क्रीड़ा समाजीकरण, अन्तर्राष्ट्रवाद, शारीरिक सौष्ठव, व्यावसायिक उपसंस्कृति, सांस्कृतिक विनिमय, अन्तर्राष्ट्रीय समझ, विश्व बन्धुत्व एवं विकास में महत्वपूर्ण होता जा रहा है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

वास्तव में, आज क्रीड़ा एक वृहद् सामाजिक संस्था के रूप में उभरी है। अतः आज शारीरिक शिक्षा के विशेषज्ञों के समक्ष यह चुनौती उभरकर आयी है कि क्रीड़ के व्यक्तिगत सरोकार के साथ सामाजिक–व्यवस्थापन के औचित्य को तार्किक (Logic) एवं वैज्ञानिक (Scientific) रूप में प्रस्तुत करें, क्योंकि क्रीड़ा का संकुचित रूप एक व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक अनुशासन, सांस्कृतिक एवं सभ्यता के विकास से जुड़ा है और व्यापक स्वरूप में यह निरंतर सामाजिक तथा सांस्कृतिक गत्यात्मकता के तारतम्य के संगठन को परिलक्षित करता है। इसी दृष्टि से प्रस्तावित शोध प्रारूप का शीर्षक : **"खेल मानसिकता के निखरते पक्ष पर एतिहासिक क्रीडा का प्रभाव : एक सामान्य अध्ययन "** को चयनित किया गया है।

"शोध" एक 'व्यवस्थित ज्ञान', ज्ञान प्रप्ति की एक विधि है, जिसके माध्यम से 'प्रघटनाओं' (सकारात्मक या नकारात्मक) के कारणों, अंतः सम्बन्धों तथा उनमें अन्तर्निहित प्रक्रियाओं का अध्ययन, विश्लेषण व निरूपण किया जाता है। यंग, पी0वी0 के शब्दों में, अनुसंधान एक "वैज्ञानिक योजन" (Scientific Undertaking) है, जिसका उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नर्वन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुर्न परीक्षा एवम् उनमें पाये जाने वाले अनुक्रमों (Sequence), अंतः सम्बन्धों, कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।" इसी प्रकार मोसर, सी0ए0 का भी मत है कि, "सामाजिक घटनाओं व समस्याओं के सम्बन्ध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए किए गए व्यवस्थित अनुसंधान को शोध कहते हैं।" स्पष्ट है कि, अनुसंधान सामाजिक घटनाओं को सु–व्यवस्थित व वैज्ञानिक ढंग से अध्ययनार्थ एक सुनिश्चित मार्ग है। अन्य शब्दों में, जब एक अध्ययनर्कत्ता नियोजित दिशा में विज्ञान द्वारा निर्धारित दिशा में अग्रसर होता है, तो उसे ही सामाजिक शोध की संज्ञा दी जाती है और यह तभी सम्भव है, जबकि अध्ययनर्कत्ता "लक्ष्य" (Aim) को सुनिश्चित कर ले।

क्रीड़ा के व्यवसायीकरण को मैलानो एवं पेट्री' (1972, 8 से 10 वर्षीय कनाडियन छात्रों पर आधारित) और वांडर वेल्डेल (1974, 10 से 11 वर्षीय छात्रों पर आधारित) स्पष्ट किया है कि, संगठित क्रीड़ा के सहभागी मनोरंजन, खेल और क्रीड़ा में असहभागियों की अपेक्षा अधिक "व्यावसायीकरण" की प्रवृत्ति रखते हैं। रिचर्डसन (1962), स्टीर्बेसन (1975) का निष्कर्ष है कि, खिलाड़ियों में खेल भावना का दृष्टिकोण कम है। कोल और पीटरसन (1965), स्तुशर (1966) के अनुसार, लघु क्रीड़ा खिलाड़ियों की तुलना में बड़े क्रीड़ा खिलाड़ियों में खेल भावना कम है। अपगार (1977) यह तथ्य उजागर किया है कि,

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

"जीतने की पृष्ठभूमि" क्रीड़ा के अन्य पक्षों की तुलना में सहभागी और असहभागी दोनों में समान रूप से निचले श्रेणी पर रखी जाती है। जीतने को "मानवीय आन्दोलन में सुन्दरता", "सामाजिक अनुभाव", "स्वास्थ्य एवं सौष्ठव" और "तनावयुक्तता" की श्रेणी के बाद स्थान दिया गया है।

परिस्थितिगत वातावरण एवं मनोवैज्ञानिक दशाओं के अंतर्गत क्रीड़ा में हिंसा को बण्डुरा, एट–आल (1963), बकोविटज, एट–अल (1963), लोबास (1961), वाल्टरस, एट–आल (1962) ने स्पष्ट किया है कि, क्रीड़ा के समय हिंसा का प्रकटीकरण देखने के साथ–साथ अधिक उद्दीपन की अवस्था में पहुँच जाता है।

विद्वानों ने सामाजिक वर्ग एवं खेल में सहभागिता के अन्तर्सम्बन्धों पर प्रयोग सि) अध्ययन्न प्रस्तुत किया है। कोलिनस (1972), ग्रीनडार्फर (1974, 1978), ग्रनेड (1975) ने सामाजिक वर्गीय स्तर के प्रकार्य के रूप में खेल में सहभागिता की सीमा को और लाय (1966, 1972), लुसचेन (1966), मालम्फी (1970) ने विशिष्ट सामाजिक वर्ग विशेष प्रकार की क्रीड़ाओं में सहभागिता को उजागर किया है।

लीवर जे0 एण्ड बीलर, एस0 (1984) ने 1900 के मध्य खेल–सूचनाओं के प्रकाशन को उद्‌घाटित किया है। मैन्डेल, आर0डी0 (1982) ने इग्लैण्ड में आधुनिक बैलों के उद्‌भव के ऐतिहासिक स्त्रोतों का विश्लेषण किया है तथा निष्कर्ष दिया कि खेल समयानुकूल विकास के क्रम की स्वजनित है। पोनोमार्योव, एन0आई0 (1981) ने शारीरिक संस्कृत और क्रीड़ा के सामाजिक प्रकार्यों को विश्लेषित करते हुए सामाजिक परिवर्तन के एक अभिकर्ता के रूप में क्रीड़ा के प्रमुख प्रकार्य को सन्दर्भित किया है। सिमर डब्ल्यू0 (1981) ने समाज और क्रीड़ा के व्याख्या की है तथा क्रीड़ा पर सामाजिक प्रगति के पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया है।

लॉय (1968) क्रीड़ा संस्थात्मीकृत है अर्थात् क्रीड़ा सामाजिक संस्था होने के साथ–साथ सामाजिक स्थिति या सामाजिक व्यवस्था है। लस्चेन (1970) ने कहा है कि, क्रीड़ा में शोध की एक परम्परा क्रीड़ा और समाज के अर्न्तसम्बन्धों पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है। बायल (1963) के अनुसार क्रीड़ा संस्थात्मक ढ़ांचे के द्वारा व्यक्त और प्रवाहित की जाती है। लॉय (1966) के अनुसार, युवा लोग, जो खेल में सर्वोच्चता प्राप्त कर लेते हैं, प्रभावकारी व्यक्तियों के माध्यम से शैक्षणिक एवं व्यावसायिक प्रतिभूति प्राप्त करते हैं। किन्तु, स्पैडी (1970) का विचार है कि, कभी–कभी क्रीड़ा सहभागिता खिलाड़ियों में वांछित शैक्षणिक उपलब्धियों की योग्यता न होते हुए भी उच्च शैक्षणिक भावना विकसित कर देती है। गुहड्हार्ट और घाटवे (1968) के मत में, एक राष्ट्र विशेष के प्रतिनिधित्व को प्रदर्शित करने वाले खिलाड़ियों के माध्यम से राष्ट्रवाद के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ रही है, जो "हथियारों के बिना युद्ध" है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

क्रीड़ा संस्कृति की आन्तरिक संरचना खिलाड़ी को व्यक्तित्व को नियोजित, विकसित व परिष्कृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आपने "खिलाड़ी और अर्नतसांस्कृतिक विनिमय की विशिष्टाओं" का विवेचन है। खिलाड़ी की भूमिका को सेवा व्यवसाय कह सकते हैं और इस सन्दर्भ में खिलाड़ी अपने कार्य के उपभोक्ताओं से कम या अधिक प्रत्यक्ष वैयक्तिक सम्बन्ध रखता है। खिलाड़ी व्यावसायिक उप–संरचना में स्थान बना सकता है, क्योंकि क्रीड़ा भावनात्मक विजय, सत्ता प्राप्त करने, सम्पत्ति, प्रसिद्धि, सामाजिक महत्त्व और सुरक्षा प्राप्त करने के सरल साधन के रूप में देखी जा सकती है।

प्रदर्शक अथवा तमाशबीन क्रीड़ा में 1960 में भी प्रसिद्ध थी,जबकि नगरीकरण और प्रौद्योगिक क्रांति का प्रभाव क्रीड़ा के उत्थान पर पड़ा था और विशेषतः उसका प्रभाव प्रदर्शनीय क्रीड़ाओं पर अधिक पड़ा। फिर हाल के वर्षों में यह अत्यधिक उपभोग में युव में प्रविष्ट हुआ। रोस्टो के अनुसार, तथ्य उपभोगवाद के युग के प्रारम्भ के साथ यह आश्चर्यजनक नहीं है कि क्रीड़ा के उपभोग में भी वृद्धि हो गयी हो। क्रीड़ा के प्रसिद्धि से क्रीड़ा दर्शकों, स्थानीय सरकारों, दल संस्थापकों, संचार माध्यमों पर और क्रीड़ा के नये–नये आयामों को प्रस्तुत करने हेतु अत्यधिक धन जारी किया जा रहा है। इस विनिमय के फलस्वरूप क्रीड़ा के अर्थव्यवस्था पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है और यह खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, अधिकारियों, लेखकों, दूरदर्शन और रेडियो के सूचना प्रसारकों, निर्माताओं और क्रीड़ा जगत से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों की आय के प्रमुख साधन के रूप में विकसित हुआ है।

बच्चे सफलता हेतु असमान्य दबाब अनुभव करते हैं। यह दबाब अभिभावकों तथा प्रशिक्षकों से उत्पन्न होता है, जो खेल–कूद में भाग लेने वाले अपने बच्चों से अत्यधिक प्रत्याशा रखते हैं। इससे बचाने के लिए बच्चों को यह विश्वास होना चाहिए कि, उन्का परिवार सहयोगी समूह और प्रशिक्षक खेल में उनके स्तर की अपेक्षा उसका महत्त्व स्वीकार करते हैं।

इस तरह क्रीड़ा विद्वानों ने क्रीड़ा की ऐतिहासिकता, विकास और खेल मानसिकता के उभरते प्रतिमान पर शोध प्रस्तुत किये हैं। प्रस्तुत प्रस्तावित अध्ययन इनके द्वारा प्रदत्त अवधारणाओं एवं निष्कर्षों के आधार पर सम्पन्न किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

"खेल मानसिकता के निखरते पक्ष पर एतिहासिक क्रीड़ा का प्रभावरू एक सामान्य अध्ययन" का महत्व, व्यापक और गहराई से समझने के लिए, खेलों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और मनोवैज्ञानिक प्रभावों पर एक समग्र दृष्टिकोण से विचार करना अनिवार्य है। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि खेल, केवल शारीरिक गतिविधि नहीं हैं, बल्कि वे मानव समाज और उसके सामूहिक मानस को आकार देने में एक अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल, अपने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, न केवल व्यक्तियों के मानसिक और शारीरिक विकास में सहायक रहे हैं, बल्कि उन्होंने समाज के व्यापक ढांचे और सांस्कृतिक मान्यताओं को भी गहराई से प्रभावित किया है।

'प्राचीन काल' में खेलों का महत्व अत्यधिक रहा है। जब हम प्राचीन सभ्यताओं की बात करते हैं, तो खेलों का उल्लेख उनके सामाजिक और सांस्कृतिक ताने–बाने का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। उदाहरण के लिए, प्राचीन ग्रीस में ओलंपिक खेलों की शुरुआत न केवल एक शारीरिक कौशल के प्रदर्शन के रूप में हुई, बल्कि उन्होंने एक व्यापक सामाजिक और नैतिक उद्देश्यों को भी पूरा किया। ओलंपिक खेलों के माध्यम से, ग्रीक समाज ने न केवल अपने शारीरिक शक्ति और सामर्थ्य का प्रदर्शन किया, बल्कि उन्होंने युवा पीढ़ी में मानसिक अनुशासन, साहस, और सामूहिकता की भावना का भी विकास किया। ये खेल समाज के विभिन्न वर्गों को एक सामूहिक पहचान प्रदान करते थे, जिससे सामाजिक समरसता और एकता का संचार होता था। इस प्रकार, यह अध्ययन प्राचीन खेलों के महत्व को उजागर करता है, और यह दिखाता है कि कैसे इन खेलों ने समाज के विभिन्न वर्गों में मानसिकता के निखरने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

'मध्ययुगीन काल' में खेलों का महत्व और भी बढ़ गया। यह वह दौर था जब समाज में युद्ध और संघर्ष की प्रवृत्ति ने खेलों को और भी महत्वपूर्ण बना दिया। इस समय में, खेलों का उपयोग योद्धाओं की मानसिक और शारीरिक तैयारी के लिए किया जाता था। खेलों के माध्यम से युद्ध के मैदान में मानसिक स्थिरता, रणनीतिक सोच, और अनुशासन की आवश्यकताओं को पूरा किया गया। जैसे तलवारबाजी, घुड़सवारी, और धनुर्विद्या जैसे युद्ध कौशल ने न केवल योद्धाओं की शारीरिक क्षमता को बढ़ाया, बल्कि उनके मानसिक अनुशासन और आत्म–नियंत्रण को भी मजबूती प्रदान की। ये खेल योद्धाओं के मनोबल को ऊंचा रखने और उन्हें युद्ध की कठोर परिस्थितियों के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध हुए। इस प्रकार, खेलों ने न केवल व्यक्तिगत स्तर पर मानसिकता को निखारा, बल्कि उन्होंने समाज के सामूहिक मानस को भी मजबूती प्रदान की।

'आधुनिक समय' में खेल मानसिकता के निखरते पक्षों पर ऐतिहासिक क्रीड़ा का प्रभाव और भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। खेल अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गए हैं, बल्कि वे समाज के समग्र विकास, शिक्षा, और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। वर्तमान समय में, जब प्रतिस्पर्धा और तनाव ने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी जगह बना ली है, खेल मानसिकता का विकास एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है। खेलों के माध्यम से न केवल व्यक्तियों में आत्म–विश्वास, अनुशासन और नेतृत्व कौशल का विकास होता है, बल्कि ये समाज में सहिष्णुता, सहयोग, और नैतिकता की भावना को भी प्रबल करते हैं। यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करता है कि खेलों के ऐतिहासिक विकास ने मानसिकता के विभिन्न पहलुओं को निखारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, और यह प्रभाव आज भी हमारे समाज और संस्कृति में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

खेल का महत्व इस बात में निहित है कि यह खेलों को केवल शारीरिक गतिविधि के रूप में नहीं देखता, बल्कि उन्हें मानसिक और सामाजिक विकास के एक प्रभावी साधन के रूप में प्रस्तुत करता है। इस अध्ययन के माध्यम से, यह पता चलता है कि खेलों का प्रभाव समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर किस प्रकार पड़ा है। खेलों ने न केवल मानसिकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि उन्होंने समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी मजबूत किया है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

1. क्रीड़ा के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
2. क्रीड़ा के वर्तमान परिदृश्य– आधुनिक नियम, तकनीकी, व्यावसायिक मानसिकता, संचार साधनों की सक्रियता एवं उत्कृष्ट प्रशिक्षण के विशेष सन्दर्भ में, का अध्ययन करना।

3. क्रीड़ा का शारीरिक–मानसिक एवं चिकित्सकीय महत्त्व के परिप्रेक्ष्य में सुदृढ़/सबल पीढ़ी के निर्माण हेतु समाजीकरण एवं व्यक्तित्व सृजन में इसकी (क्रीड़ा की) भूमिका का परीक्षण
4. क्रीड़ा एवं सामाजिक–सांस्कृतिक गत्यात्मकता का अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास और परस्पर अन्तः सांस्कृतिक अभिविनिमय के सन्दर्भ में विश्लेषण करना।
5. वर्तमान में नवीन खेल मानसिकता के उभरते नवीन प्रतिमान का सम्यक् चित्र प्रस्तुत करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्ष न केवल हमें खेलों के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने में मदद करेगें, बल्कि वे हमें आज के संदर्भ में खेल मानसिकता के विकास को भी बेहतर ढंग से समझने का अवसर प्रदान करते हैं। आज के समाज में, जहाँ खेलों का प्रभाव शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक सुधारों पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, यह अध्ययन अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि खेल केवल एक प्रतिस्पर्धा का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक और सामाजिक विकास के एक शक्तिशाली उपकरण हैं, जिनका प्रभाव समय और स्थान की सीमाओं से परे है।

यह अध्ययन न केवल खेलों के इतिहास को हमारे सामने लायेगा, बल्कि यह हमारे वर्तमान और भविष्य के खेलों की दिशा को भी परिभाषित करता है, जिससे हम एक बेहतर, अधिक संतुलित और मानसिक रूप से सुदृढ़ समाज का निर्माण कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अभिषेक : "ट्रेस्कोथिक पैसों की भूख के शिकार", दैनिक जागरण, नवम्बर 22, 2006.
2. इण्डिया, युवा कार्य और खेल, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, 2006, पृ0 864–867.
3. उत्तर प्रदेश : खेलकूद एवं युवा मंत्रालय, सूचना एंव जनसंपर्क विभाग, उ0प्र0, लखन0, 1666, पृ0 700–706.
4. श्रीवास्तव, अरूण कुमार "क्रिकेट में सट्टेबाजी धवलता पर पुती कालिख", सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, नई दिल्ली, जून 2000, पृ0 11–12.
5. गुप्त, बसंत : "टेनिस में फैशन की धूम", सहारा समय, 6 सितम्बर, 2006, पृ0 16.
6. चतुर्वेदी, शैलेश : "खिलाड़ी और ब्रैण्ड अम्बेसडर का खेल", हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्र, रवि उत्सव, 1 मई, 2005, पृ0 1.
7. नेहरू, अरूण : "खेल के मैदान में पक्षपात", दैनिक जागरण, वाराणसी, शनिवार, 2 सितम्बर 2006, पृ0 10.